Review Of Research
Vol. 3 | Issue.5 | Feb.2014
ISSN:-2249-894X Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

हिंदी काव्य में मुस्लिम कवियों का योगदान
(रीतिमुक्त कवि आलम के विशेष संदर्भ में)

डॉ. जिभाऊ शा. मोरे
के.जे.सोमैया महाविद्यालय,कोपरगाँव तह.कोपरगाँव जिला. अहमदनगर.

इस बात में कोई संदेह नहीं,किहिंदी काव्य में मुस्लिम कवियों नेकाफी योगदान दिया है।इसके प्रमाण हैं - कवि मलिक मोहम्मद जायसी, रहीम, रसखान, उस्मान, जलालुद्दीन, कासिम शाह आदि।वैसे तो आलम नाम बहुत सारे हिंदी जानने वालोंको अपरिचित है।आलम की महत्ता वही जान सकता है, जो आलम के जमाने में उसे सुन चुके हैंआलम के पास न जाति-बिरादरी, धर्म-पंथथा।वह तो काव्य का पुजारी था।काव्यहीउसकी पूजा थी और उसकी पूजा नेसचमुच 'आलम'हिंदी साहित्य में दिखाई दिया।आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसादजी की आलोचना में उन्होंने जायसी के बाद आलम को ही स्थान दिया है।फर्क इतना है कि आलम की रचनाएं संख्या में अधिक ना होने सेवह हिंदी साहित्य का सूरज तो क्या चंद्रमा भी नहीं बन सका।परंतु जो भी उसका है वह अमावस की रात में जुगनू से भी बढ़कर प्रकाश देता है।

आलम नाम के हिंदी जगत में अब तक दो कवि माने जाते रहे हैं, जिसमें प्रथम-'माधवान लका मकंदला' नामकप्रबंध काव्य केनिर्मातातथा दूसरे शहंशाह औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम शाह के आश्रित स्वच्छंद मुक्तक काव्य की रचना करनेवाले कवी आलम।परंतु आजकल डॉ.गणपति चंद्र गुप्त आदि कतिपय विद्वानों के मतानुसार यह दोनों एक ही है।कवि आलम के व्यक्तिगत जीवन के संबंध में कुछ जनश्रुतिविख्यात हैकि,कवि आलम मूलतः जाति से ब्राह्मण थे,परंतु एक रंगरेजन यानी की पगड़ी को रंग देने वाली किसी शेख नामक स्त्री के प्रेम में फँसकर उससे विवाह कर लियाऔर धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान भी बन गए।शायद इसी कारण कवि आलम को मुस्लिम कवियों में स्थान दिया जाता है।डॉ.शिवकुमार शर्मा ने भी लिखा है,"इनके प्रेम की कहानी बड़ी विचित्र है।आलम ने अपनी पगड़ी रंगने को दी थी जिसमें दोहे की एक पंक्ति लिखी हुई बंधी रह गई थी -"कनकछरी-सी कामिनी काहे को कटि छीन।"रंगरेजिननेइसके प्रत्युत्तर में दूसरी पंक्ति लिखकर भेजी -" कटि कोकंचनकाटि विधि कुचन मध्य धरिं दीन।"[i]

वैसे हिंदी केबहुत कम आलोचकों ने आलम पर बहुत कम लिखा है।आलम की रचनाएं संख्यात्मक नहीं गुणात्मक है।उनकी एकमात्र रचना जो बताई जाती है और उसका हिंदी साहित्य में जगमगाता नाम है 'आलम केलि',जिसके बारे में भी काफी मतभेद बना हुआ है।'आलम केलि'का अपना अस्तित्व है, अपना एक वजूद है, अपनी एक खासियत है।वह ऐसा वजूद है जो हिंदी साहित्य को गौरवान्वित करने में कोई कसर नहीं रखता।यह बात अलग है कि आज उसे बहुत कम लोग जानते हैं।इसका मतलब यह नहीं होता कि, कम जानने से उस रचना का महत्व कम हो जाता है।उनकी रचना का प्रमुख विषय है-प्रेम।प्राचीन काल से आज तक और रीतिकाल से आधुनिक काल तक और साठोत्तरी कविता से नववे दशक तक की कविता मेंप्रेम, रीतिकाल के काव्य में प्रेम, भक्तिकाल के काव्य में प्रेम,इससे बिल्कुल अलग परंतु प्रेम रस में पूरा घुलामिला, प्रेम में पगा, परिपक्वता की सीमा में आबद्ध,आलम के प्रेम की बराबरी महान कवि जायसी से की जा सकती है।लेकिन उसका प्रेम जायसी का सूफीप्रेम नहीं था।परंतुआत्मा और परमात्मा, जीव और ब्रह्म इसकी तुलना में उन्हें जायसी के स्कूल में रख सकते हैं।इस पर विद्वानों की मतभिन्नता हो सकती है।उस काल में अवधी और ब्रज राम-कृष्ण की कथा के प्रमुख सोपान थे और इसलिए मुस्लिम कवियों को भी प्रेम के विषय के लिए अवधी और ब्रज का ही सहारा लेना पड़ा।क्योंकि उनके प्रमुख विषय राम और कृष्ण हुआ करते थे।उनकी 'आलमकेलि'की कई स्फुट रचनाएं निम्न शीर्षकों में रखी गई हैं-कृष्ण की बाल लीला, नवोढा, प्रौढा,, अभिसारिका, मानिनी, संकेतस्थ,नायककीदूती, विरहवर्णन, सखीकीउक्ति, सखीकेप्रति,, खंडित, प्रेमकथन, बंसी, भँवरगीत,उद्धव का लौटना, यशोदा बिरह, गोपी बिरहआदि।यह वर्गीकरण कवि आलम द्वारा किया हुआ न होकर उनके किसी अनुगामी कवि ने किया है,क्योंकिआलम तो स्वच्छंदीवृत्तिके प्रेमी कवि थे।वे केवलमुक्तकों की ही रचना करते थे।इस कृति मेंभक्ति, प्रेम और नीति का सुंदर संगम देखने को मिलता है।इसकी भाषा के बारे में तो पहले ही बता चुके हैं कि,कवि आलम की भाषा ब्रज तथा अवधी का मिश्रित घोल है।सामान्यतःइसी एकमात्र कृति के आधार पर आलम को हिंदी साहित्य जगत में एक मुक्तक काव्यकारकविकेरूप में जाना जाता है। आलम ने मुक्तक और प्रबंध दोनों प्रकार की रचनाओं की निर्मिति की है,परंतु उनकी कृति का प्रमुख आधार उनकी प्रारंभिक रचनाएं ही हैं।इनकी रचनाओं में जो सच्चा रीतिमुक्त तथा स्वच्छंद कवि बसा हुआ है वह अन्यत्र नहीं है।

इस संबंध में डॉ.भगीरथ मिश्र का मंतव्य बिल्कुल ठीक जान पड़ता है-"भावावेग कीजो सघनता, अनुभूतियों कोतरल बना देनेवाली जो लीनता और वाग योग का जोविनि योग उनके मुक्त को में देखा जाता है, वह प्रबंध काव्यों में नहीं हैं।"[iii]'आलम-केलि'के अतिरिक्त आलम द्वारा रचित अन्य कुछ रचनाएं डॉ. गणपति चंद्र गुप्त द्वारा बताई गई है,जो इस प्रकार हैं–'माधवान लका मकंदला', 'सुदामाचरित'और 'स्यामसनेही'।'माधवान लका मकंदला'के बारे में कह सकते है,किइसमें पुष्पावती नगर के रूपवान ब्राह्मण माधव तथा कामावती नगरी की नर्तिका कामकंदला की लोक प्रचलित प्रेम-कथा प्रबंध शैली में बताई गई है।यह पूरी प्रेम कथा श्रृंगार रस में रची गई है।मूल कथा के साथ कुछ अन्य कथाएं भी जुड़ गई हैं।जैसे-प्रारंभ में ही मंगलाचरण के बाद इंद्रसभा का

वर्णन,शापवशजयंती नामक अप्सरा का जंगल में शिला के रूप में पड़ी होना, माधव द्वारा उसका उद्धार होना, उस अप्सरा का उस पर मोहित होना, और बाद में जयंती का पुष्पावती नगरी में कामकंदला के रूप में अवतरित होना आदि बातें दृष्टिगत होती हैं।प्रबंधात्मकप्रेमाख्यान के रूप मेंकवि आलम की यह कृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताई जाती है।इसमें वस्तुशिल्प, वर्णनात्मक और चरित्र-चित्रण पौराणिक ढंग से हुआ है। साथ ही साथ लोकगीतों वाली पद्धति का अनुसरण कवि ने किया है।परिष्कृत अवधी का प्रयोग और श्रृंगार रस का निर्वाह इसका दूसरा वैशिष्ट्य है।कवि आलम का प्रबंध कौशल सराहनीय है।मिसाल के तौर पर इस कृति की कुछ काव्य-पंक्तियाँ देखिए-

"काम केलिबेलिसीअकेली कुंज धाम खरी
बदन की आभा जनू फूलत कमल है
कहि कवि आलम जगमगतअंगवाके
रवि के किरनि मिली कदली कोदलु है।"

इन पंक्तियों में कवि ने मानव-सौंदर्य की प्रकृति-सौंदर्य से तुलना करने के लिए प्रकृति के बिंब की सृष्टि की है।इस कृतिमेंसोरठा, दोहा, चौपाई, आदिछंदोंका सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

'सुदामा चरित्'आलम की कृष्ण और सुदामा के जीवन पर लिखी हुई एक उत्कृष्ट कृति है।इस कृति में सुदामा और कृष्ण के बचपन के प्रसंग कवि ने उद्दतकिए हैं।इसे खंडकाव्य की श्रेणी में रखा जाता है।यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि मुसलमान हो जाने पर भी कवि आलम के हृदय में कृष्ण भक्ति का स्थान अटल रहा और वे अंत तक वैष्णवों की भांति रहे।आलम द्वारा इस कृति की रचना से पूर्व ही कवि नरोत्तम दास ने अपने 'सुदामाचरित' नामक काव्य में इस विषय का निर्वाह किया था।हो सकता है आलम के सामने यहीपुस्तक रही हो।कथावस्तु तो दोनों की समान है परंतु भाषा शैली तथा रचना तत्व की दृष्टि से दोनों अलग-अलग है।कवि आलम की कृति का अपना विशिष्ट स्थान है।

'स्यामसनेही' भीआलम द्वारा हीरचितएक वर्णन-प्रधान खंडकाव्य है। जिसमें' रूक्मिणी विवाह' वर्णित किया है।इसकी कथा तो देखने में बहुत छोटी लगती है परंतु वर्णनों का विस्तार करते हुए कवि ने उसका विकास किया है।स्वयं कवि आलम ने यह स्पष्टतः स्वीकार किया है कि इस कृति के विषय प्रेम और भक्ति दोनों है।जैसे-

प्रेम रुपभक्ति ताहिमन भावै।
करै कंठ जग सोभापावै।

याने कि प्रेम की भक्ति उसी के मन को भा जातीहै, जो ईश्वर को हमेशा अपनी वाणी से याद करता है और भविष्य में जगत मैं ख्याति पाता है।इस अस्थिर संसार में मन को प्रेम-भक्ति से ओत-प्रोत करने के लिए ही'स्याम-सनेही'कीरचना की गयी थी।इससंदर्भ में डॉ.विश्वनाथ त्रिपाठी कामंतव्य दृष्टव्य है - " आलम की कविता के उत्कर्ष का आधार सीधे जीवन से स्थितियाँ

उतारकर उनकी मार्मिक योजना कर देने में है।वे प्रायः काव्य के क्षेत्र में प्रचलित रुढियों का सहारा नहीं लेते।जिस प्रकार वे जीवन में व्यर्थ बोझ उतार फेंक सकतेथे,उसी प्रकार काव्य में वे केवल सार्थक वक्तव्य के सहारे मार्मिकता पैदा कर सकते थे।"[iii]आलमने कहा है-

"आलमजी वहु जोपलकइहि चंचल संसारु।
दैहार पोषहु मनहि प्रेमभक्ति आधारु।"

इस रचना में भी आलम ने मिश्रित ब्रजभाषा का ही सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।आलम की रचनाओं का अनुशीलन करने पर कहीं-कहीं हमें यह मानना पड़ेगकिआलम ने रीतिमार्ग को अपनाया है।इस तथ्य की पुष्टि में 'सुदामाचरित' का उदाहरण दिया जाता है,कि इसकृति में सुदामा और कृष्ण के सौहार्द भाव का स्वरूप बहुत कुछ रुढऔर आदर्शवादी रूप में ही दिखाया गया है।साथ ही उनके काव्य की कुछ अन्य विशेषताएं बताई जाती है।वे इस प्रकार हैं-कवि आलम अपने काव्य प्रवाह को किसी परंपरा या विशिष्ट तिथियों में बांधकर नहीं चलना चाहते थे।उनका अपना स्वतंत्र मार्ग है और उसी को लेकर वेचलना चाहते थे।दूसरी विशेषता उनके श्रृंगार काव्य के अंतर्गत भाव-प्रवणता देखी जाती है।क्योंकिवे अपने यथार्थ जीवन में बहुत बड़े प्रेमी होने के कारण उनकी कविता में प्रेम और उमंग तथा भावानुकूलता दिखाई देती है।इन्होंनेप्रेम या इश्क में मिलने वाले दर्द कोअपनी कविता में साकार कर दिखाया है। इस संबंध में आचार्य शुक्ल के विचार ठीक ही है- "वेप्रेमोन्मत्त कवि थेऔर अपने तरंग के अनुसार रचना करते थे, इसी कारण इनकी रचनाओं में हृदयतत्व की प्रधानता है।यह तन्मयता सच्ची उमंग में ही संभव है।प्रेमकी तन्मयताकीदृष्टि से आलम की गणना रसखान और घनानंद की कोटि में की जानी चाहिए।"[iv]

संदर्भ :

[i]डॉ.शिवकुमार शर्मा ,हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ,अशोक प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ क्र.402
[ii]डॉ.भगीरथ मिश्र,हिंदी का रीतिकाव्य,पृष्ठक्र.89
[iii]डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी,हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ क्र.48
[iv]आचार्य रामचंद्र शुक्ल,(सं.२००३),हिंदी साहित्य का इतिहास,अशोक प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ क्र.198